सर्कस जंगली जानवरों के लिए पाशविक है

भारत में तो सर्कसों में जानवरों के उपयोग पर प्रतिबंध है मगर कई देशों में आज भी जानवर सर्कसों के सितारे हैं। अलबत्ता एक ताज़ा अध्ययन बताता है कि सर्कस का वातावरण जानवरों, खास तौर से जंगली जानवरों के लिए पाशविक साबित होता है।

यह अध्ययन ब्रिस्टल विश्वविद्यालय के स्टीफन हैरिस और उनके सहयोगियों ने किया है तथा इसके परिणाम *एनिमल वेलफेयर* नामक पत्रिका के ताज़ा अंक में प्रकाशित हुए हैं।

हैरिस का कहना है कि चाहे जगह की कमी हो, या उछलकूद का अभाव हो, या सामाजिक संपर्कों की कमी, कुल मिलाकर सर्कस का जीवन वन्य जीवन से बदतर होता है। अध्ययन में पाया गया कि सर्कस में रहने वाले जानवर दिन में मात्र 1-9 प्रतिशत समय प्रशिक्षण में गुज़ारते हैं। शेष समय वे तंग दड़बों या पिंजड़ों में कैद रहते हैं। ये पिंजड़े बहुत छोटे होते हैं और चिड़ियाघरों जैसे नहीं होते। घोड़े, कुत्ते जैसे पालतू जानवर तो इसके अभ्यस्त हो जाते हैं मगर हाथी, शेर, बाघ और भालू जैसे वन्य पशुओं की शामत आ जाती है।

हालत यह होती है कि सर्कस के जानवर ज़्यादातर समय तनावग्रस्त रहते हैं। वे अपने छोटे-छोटे पिंजड़ों में चहलकदमी करते दिन बिताते हैं, जो तनाव का एक लक्षण है। यदि सर्कस उनके लिए थोड़े बड़े दड़बे भी बनाता है, तो

भी उनमें लकड़ी के लट्ठे वगैरह जैसी चीज़ें नहीं रखी जातीं जिनसे ये जानवर खेल सकें। डर यह रहता है कि इन चीज़ों का उपयोग करके कहीं ये बागड़ तोड़कर भाग न जाएं।

संक्षेप में, हैरिस कहते हैं कि इन जानवरों का जीवन नारकीय हो जाता है, इस पर प्रतिबंध लगाया जाना चाहिए। भारत के समान ऑस्ट्रिया जैसे कुछ अन्य देशों में भी सर्कस में जानवर रखने पर प्रतिबंध है मगर युरोप तथा यूएस के सर्कसों में जानवर आज भी आकर्षण का प्रमुख केंद्र हैं। ***(स्रोत फीचर्स)***